M.A. II - Sem IV

Hist - Ec - 3 (C)

Trade Union Movements

ट्रेड यूनियन आन्दोलन का अर्थ है — संगठित औद्योगिक मजदूरों का आन्दोलन। इतिहासकार डी० एच० कुकानन के अनुसार भारत में वास्तविक अर्थ में औद्योगिक मजदूरों का जन्म 1850-55 में हुआ, जब देश में पहली कपड़ा मिल, पहली रेल तथा खानों से काफी कोयला निकाला गया; यद्यपि उसके पहले 1835 तक चाय बगान के मजदूरों का जन्म हो चुका था। इस प्रकार यह कहा गया कि श्रमिक संघ श्रमिकों अथवा मजदूरों का वह संगठन है, जो उद्योगपतियों के शोषण से सुरक्षा पाने और श्रमिकों के अधिकारों तथा हितों की रक्षा के उद्देश्य से संगठित किया जाता है। ब्रिटेन के पूर्व मंत्री विन्सटन चर्चिल ने श्रमिक संघ को स्थायित्व तथा प्रगति की आत्मा माना है। श्री वी० वी० गिरि ने संघों को श्रमिकों के आर्थिक हित के लिए आवश्यक माना है। वस्तुतः श्रमिक वर्ग का उदय अपने आप में एक सामाजिक क्रांति थी।

Trade Union Movements

इतिहास में मजदूर वर्ग के असंतोष का पहला प्रभावी संकेत 1877 ई० में प्रगट हुआ जब मजदूरी के दर के प्रश्न को लेकर नागपुर के एम्प्रेस मिल के मजदूरों ने हड़ताल रखी। इसके बाद 1882 से 1890 की अवधि में मद्रास और बम्बई प्रेसीडेंसियों में 25 हड़तालें दर्ज की गई। ये हड़तालें अक्सर जुर्माने, वेतन में कटौती आदि के खिलाफ होती थी।

श्रमिक संघ के विकास के इतिहास को दो खंडो में बांटा जा सकता है - 19 वीं शताब्दी में विकास और 20 वीं शताब्दी में विकास।

19 वीं शताब्दी में विकास -

इस काल में औद्योगिक विकास हुए, साथ ही साथ श्रमिक संघों तथा उनके आन्दोलनों का विकास हुआ। उद्योगपतियों ने संघ बनाकर श्रमिकों के विरुद्ध अपने हितों की रक्षा करने का यत्न किया। उनके पक्ष में 1860 में एक अधिनियम पारित हुआ, इसका नाम था 'श्रमिक संविदा भंग अधिनियम'। मालिकों के ये संघ या संगठन "चैम्बर्स ऑफ कामर्स" कहलाते है। श्रमिक समाज में जागरण लाने का

Trade Union Movements.

आन्दोलन श्री नारायण मेघा जी लोखण्डे ने 1884 ई० में किया। इन्हें श्रमिकों का पहला नेता कहा जाता है। 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध से लेकर प्रथम विश्वयुद्ध तक श्रमिकों के हितों की चिंता की गई। अप्रैल 1890 ई० में बम्बई में 10 हजार श्रमिकों का एक सम्मेलन हुआ। इसी वर्ष श्रमिकों ने सप्ताह में एक दिन अवकाश, काम के घंटों पर पाबंदी, दोपहर में एक-डेढ़ घंटे की छुट्टी, दुर्घटनाग्रस्त मजदूरों को ~~मु~~ मुआवजा की मांग से सम्बन्धित निवेदन पत्र बम्बई के मिल मालिकों के सम्मुख प्रस्तुत किया। सरकार ने इसपर सहमति प्रगट कर दी इस सफलता से प्रेरित होकर श्रीलोखंडे ने 1890 में 'बम्बई मिल हैण्ड्स एसोसिएशन (Bombay Mill hand's Association) ~~नामक~~ नामक प्रथम श्रमिक संस्था की स्थापना की। इसके बाद कई संगठन बने लेकिन प्रथम युद्ध की समाप्ति तक मजदूरों के संघर्ष की किसी ने स्पष्ट व्याख्या नहीं की, यहाँ तक कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भी।

1891 ई० में द्वितीय कारखाना अधिनियम बने, जिसमें स्त्रियों की स्थिति में सुधार, बच्चों के काम करने की न्यूनतम आयु 9 वर्ष निर्धारित की गई और 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए समय

Trade Union Movement

सीमा सीमित किया गया। डेढ़ घंटे के मध्यावकाश के साथ एकदिन का साप्ताहिक अवकाश की व्यवस्था की गई। इस अधिनियम के पास होने के साथ ही श्रमिक आंदोलन का प्रथम अध्याय की समाप्ति हुई।

बीसवीं शताब्दी में श्रमिक संघ का विकास —

1905-14 के बीच दो कारकों ने श्रमिक आंदोलन को बढ़ावा दिया। वे हैं बंगाल विभाजन और स्वदेशी आंदोलन।

इस दौरान कई संघों का जन्म हुआ, जैसे बम्बई पोस्टल यूनियन (1907), कलकत्ता का प्रिंटर्स यूनियन (1908), बम्बई की कामगार हितवर्द्धक सभा (1910) आदि। 1911 ई० में फैक्टरी अधिनियम पारित हुआ जो श्रमिकों के सुरक्षा तथा स्वास्थ्य से संबन्धित था।

मजदूरों का सबसे महत्वपूर्ण हड़ताल 22 जुलाई 1908 को तिलक को दिए गए 6 साल के विरुद्ध बम्बई के मजदूरों ने की थी। यह मजदूरों की राजनीतिक आम हड़ताल थी जो 6 दिन तक जारी रही। इस लड़ाई ने यह प्रमाणित कर दिया कि भारत का मजदूर वर्ग भी राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। 1919 ई० में स्वतंत्र होते-होते

Trade Union Movements

1919 और 1920 के दौरान में हड़तालों की व्यापकता और तेजी अपनी चरम सीमा पर पहुंच गई।

ट्रेड यूनियन संगठन का पहला प्रयास वी० पी० वाडिया ने 1918 में "मद्रास श्रमिक संघ" की स्थापना के रूप में किया, लेकिन इसने सफलता अर्जित नहीं की।

1918 ई० में मजदूरों का पक्ष लेकर महात्मा गांधी ने उनका नेतृत्व किया। कांग्रेस ने "अहमदाबाद कपड़ा मिल श्रमिक संघ" की स्थापना की। लेकिन कांग्रेस मजदूरों की उग्रवादी प्रवृत्ति पर अंकुश लगाना चाहती थी तथा देशी पूंजीपतियों को खतरा से दूर रखना चाहती थी 1920 ई० में "अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस" की स्थापना की गई। इसे विभिन्न ट्रेड यूनियनों से जोड़ दिया गया। इसका पहला अधिवेशन 1920 में लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में बम्बई में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में वर्ग शांति का उपदेश दिया गया तथा मजदूरों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण रवैया रखने की मांग की मांग सरकार से की गई थी।

1922 ई० से 1926 ई० का काल भारतीय उद्योग और अर्थव्यवस्था में मंदी का काल था। मजदूरों के वेतन में कटौती तथा छंटनी की जाने लगी। मजदूरों में असंतोष बढ़ता गया। लेकिन ट्रेड यूनियन कांग्रेस हड़ताल के पक्ष में नहीं थी।

Trade Union Movements

मजदूरों में साम्यवादी प्रवृत्ति बढ़ने लगी। सरकार ने साम्यवादियों को कुचलने के लिए आठ चार प्रमुख नेताओं – डांगे, शौकत उस्मानी, मुजफ्फर अहमद और "कानपुर षडयंत्र केस" चलाकर गिरफ्तार कर लिया। 1929 में गवर्नर जनरल लॉर्ड इरविन ने एक अध्यादेश निकालकर "मेरठ षडयंत्र केस" चलाया। उनपर ब्रिटिश सरकार का तख्ता उलटने का षडयंत्र रचने का आरोप था। साम्यवादियों ने "रेड ट्रेड यूनियन कांग्रेस" की स्थापना की, लेकिन इनमें आपसी विवाद और नीति सम्बन्धी मतभेद के कारण यह सफल नहीं रहा। फलतः सम्बद्ध विभिन्न यूनियनें पुनः "अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस" में आने लगी। 1935 में दोनों ट्रेड यूनियनें एक हो गईं। सन् 1936 में वी० वी० गिरि के प्रयत्नों से ट्रेड यूनियन फेडरेशन और ट्रेड यूनियन कांग्रेस एक हो गए। 1942 के दौर में जब कांग्रेसी नेता जेल में बंद थे, तब सुअवसर पाकर साम्यवादियों ने अपना प्रभाव बढ़ाना आरम्भ कर दिया।

युद्धकाल में कांग्रेस के कुछ सदस्य तटस्थ नीति के पक्षधर थे, लेकिन डॉ मानवेन्द्र नाथ राय युद्ध में पूरा सहयोग देने के पक्षपाती थे। इन्होंने "इंडियन फेडरेशन ऑफ लेबर" नामक संस्था बनाई, लेकिन इन्हें सहयोग नहीं मिला।

1944 ई० के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में सरकार ने दोनों के प्रतिनिधियों को बुलाया। जाँच उपरान्त "ट्रेड यूनियन कांग्रेस" को स्वतंत्रता से कार्य करने का अधिकार मिला।

Kalindi